महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर E-PAPER, सोमवार, 11 मई 2026
MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

सत्य का स्वराज

शोर से परे पत्रकारिता : सत्य, समाज और राष्ट्र की नई चुनौती

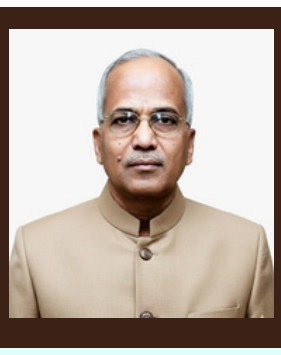

तकनीक, विचारधारात्मक संघर्ष और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में पत्रकारिता को पुनः सत्य, लोकहित और नैतिक उत्तरदायित्व के अपने मूल आदर्शों की ओर लौटना होगा...

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरू ,महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (अजमेर)

आज का समय सूचना-विस्फोट का समय है। हर क्षण खबरें बन रही हैं, फैल रही हैं और समाज की सोच को प्रभावित कर रही हैं। लेकिन इस तीव्र सूचना-युग में सबसे बड़ा संकट सूचना का नहीं, बल्कि सत्य का है। पत्रकारिता, जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, आज स्वयं एक ऐसे मोड़ पर खड़ी दिखाई देती है जहाँ उसे यह तय करना है कि वह समाज को दिशा देगी या केवल प्रतिक्रियाओं का माध्यम बनकर रह जाएगी। भारतीय परंपरा में शब्द को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं माना गया, बल्कि उसे "शब्द ब्रह्म" कहा गया। हमारे यहाँ संवाद का अर्थ केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं था; संवाद समाज, संस्कृति और राष्ट्र को जोड़ने वाला सेतु था। यही कारण है कि भारतीय पत्रकारिता की मूल आत्मा सदैव तीन आधारों पर टिकी रही—सत्य, लोकहित और धर्म। यहाँ धर्म का अर्थ किसी पंथ विशेष से नहीं, बल्कि नैतिकता, कर्तव्य और उचित आचरण से था।

भारतीय पत्रकारिता की यही विशेषता उसे केवल पेशा नहीं, बल्कि साधना बनाती है। महाभारत से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन तक, भारत की संवाद परंपरा ने सदैव समाज को जोड़ने, जागृत करने और राष्ट्र निर्माण का कार्य किया। संजय द्वारा धृतराष्ट्र को युद्ध का प्रत्यक्ष वर्णन सुनाना हो, चाणक्य द्वारा सुशासन के लिए संवाद-तंत्र की आवश्यकता पर बल देना हो, या फिर लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय और महात्मा गांधी द्वारा पत्रकारिता को स्वतंत्रता संघर्ष का माध्यम बनाना—इन सभी उदाहरणों में पत्रकारिता जनचेतनाकी शक्ति बनकर सामने आती है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद धीरे-धीरे पत्रकारिता का स्वरूप बदलता गया।

सूचना का विस्तार तो हुआ, परंतु उसके साथ वैचारिक पूर्वाग्रहों और कृत्रिम आख्यानों का भी विस्तार हुआ। आज पत्रकारिता का एक बड़ा संकट यह है कि वह तथ्य और नैरेटिव के बीच उलझती जा रही है। घटनाओं का विश्लेषण कम और पूर्वनिर्धारित विमर्श अधिक दिखाई देता है। किसी नीति की 80 प्रतिशत सफलता की बजाय 20 प्रतिशत विफलता को प्रमुखता देना अब सामान्य प्रवृत्ति बन चुकी है।

लोकतंत्र में आलोचना आवश्यक है, लेकिन आलोचना और नकारात्मकता में अंतर होता है। जब पत्रकारिता का उद्देश्य केवल अविश्वास, भय और असंतोष पैदा करना बन जाए, तब वह समाज को दिशा देने के बजाय उसे विभाजित करने लगती है।

आज मीडिया के एक हिस्से में यह प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है कि पहले निष्कर्ष तय कर लिए जाते हैं और फिर तथ्यों को उसी निष्कर्ष के अनुरूप प्रस्तुत किया जाता है। इससे भी अधिक गंभीर संकट भाषा के हथियारीकरण का है। शब्द अब संवेदनशील संवाद के बजाय वैचारिक आक्रमण के उपकरण बनते जा रहे हैं। "नीति लागू हुई" की जगह "नीति थोपी गई", "कार्रवाई हुई" की जगह "दमन किया गया" जैसे शब्द केवल सूचना नहीं देते, बल्कि मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी निर्मित करते हैं। इस प्रकार पत्रकारिता धीरे-धीरे विमर्श निर्माण की ऐसी प्रक्रिया में बदलती जा रही है जहाँ भाषा निष्पक्षता खोकर विचारधारात्मक औजार बन जाती है।

आज समाज को यह समझने की आवश्यकता है कि नैरेटिव और सत्य एक ही चीज नहीं हैं। लगातार दोहराया गया आधा-सत्य भी धीरे-धीरे सार्वजनिक धारणा बन जाता है। यही कारण है कि पत्रकारिता की जिम्मेदारी पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। मीडिया को केवल प्रश्न उठाने तक सीमित नहीं रहना चाहिए; उसे संतुलन, संदर्भ और समाधान भी प्रस्तुत करने होंगे।

इसी संदर्भ में "कंस्ट्रक्टिव जर्नलिज्म" अर्थात रचनात्मक पत्रकारिता की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। रचनात्मक पत्रकारिता का अर्थ सरकार या व्यवस्था का अंध समर्थन नहीं है, बल्कि समस्याओं को समाधान के साथ प्रस्तुत करना है। आलोचना लोकतंत्र का अधिकार है, लेकिन आलोचना यदि निरंतर निराशा और अविश्वास का वातावरण बना दे, तो वह समाज को कमजोर करती है।

पत्रकारिता का कार्य केवल संकट दिखाना नहीं, बल्कि संभावनाओं को भी सामने लाना है। यदि कोई नीति समाज को लाभ पहुँचा रही है, यदि कोई परिवर्तन राष्ट्र के विकास में योगदान दे रहा है, तो उसे भी उसी गंभीरता से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिस गंभीरता से विफलताओं को दिखाया जाता है।

भविष्य की पत्रकारिता को लेकर चुनौतियाँ और भी जटिल हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), डीपफेक तकनीक, वर्चुअल रियलिटी, डेटा एनालिटिक्स और रोबोटिक रिपोर्टिंग मीडिया की दुनिया को तेजी से बदल रहे हैं। आने वाले समय में समाचार केवल पढ़े या सुने नहीं जाएंगे, बल्कि "अनुभव" किए जाएंगे। वर्चुअल रियलिटी ऐसी पत्रकारिता लेकर आएगी जहाँ दर्शक स्वयं को घटना-स्थल पर उपस्थित महसूस करेगा। भविष्य की पत्रकारिता को लेकर चुनौतियाँ और भी जटिल हैं।

एआई, डीपफेक तकनीक, वर्चुअल रियलिटी, डेटा एनालिटिक्स और रोबोटिक रिपोर्टिंग मीडिया की दुनिया को तेजी से बदल रहे हैं। आने वाले समय में समाचार केवल पढ़े या सुने नहीं जाएंगे, बल्कि "अनुभव" किए जाएंगे। वर्चुअल रियलिटी ऐसी पत्रकारिता लेकर आएगी जहाँ दर्शक स्वयं को घटना-स्थल पर उपस्थित महसूस करेगा। लेकिन तकनीक जितनी शक्तिशाली होगी, नैतिक संकट भी उतने ही गहरे होंगे। डीपफेक तकनीक सत्य और असत्य के बीच की रेखा को धुंधला कर रही है। एआई आधारित लेखन मौलिकता और मानवीय संवेदना को चुनौती दे रहा है। डेटा एनालिटिक्स जनमत को प्रभावित करने का नया माध्यम बन चुका है। ऐसे समय में पत्रकारिता को केवल तकनीकी दक्षता से नहीं, बल्कि नैतिक विवेक से भी लैस होना होगा। यदि पत्रकारिता मानवीय संवेदना खो देगी, तो वह केवल सूचना उद्योग बनकर रह जाएगी। विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों की भूमिका यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

पत्रकारिता की शिक्षा केवल रिपोर्टिंग तकनीकों तक सीमित नहीं रह सकती। भविष्य के पत्रकारों को भाषा, दर्शन, इतिहास, संस्कृति, संविधान, तकनीक और सामाजिक मनोविज्ञान सभी का गहरा बोध होना चाहिए। जो पत्रकार शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव को नहीं समझता, वह समाज को दिशा नहीं दे सकता।

भारत आज वैश्विक परिवर्तन के एक निर्णायक दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय में पत्रकारिता को राष्ट्र और समाज के बीच एक जिम्मेदार सेतु बनना होगा। उसे न तो सत्ता का उपकरण बनना चाहिए और न ही केवल विरोध का मंच। पत्रकारिता का वास्तविक दायित्व सत्य को समाज के समक्ष संतुलित और उत्तरदायी रूप में प्रस्तुत करना है।

आने वाला समय निश्चित रूप से एआई, डिजिटल मीडिया और इमर्सिव जर्नलिज्म का होगा, लेकिन पत्रकारिता की आत्मा वही रहेगी जो सदियों से रही है—सत्य, लोकहित और नैतिक साहस।

तकनीक पत्रकारिता के स्वरूप को बदल सकती है, लेकिन उसके मूल्यों का स्थान कभी नहीं ले सकती। यदि पत्रकारिता अपनी बौद्धिक ईमानदारी, संवेदनशीलता और रचनात्मक दृष्टि को पुनः स्थापित कर पाती है, तो वह भविष्य में भी लोकतंत्र की सबसे प्रभावशाली शक्ति बनी रहेगी। लेकिन यदि वह केवल सनसनी, वैचारिक आग्रह और कृत्रिम आख्यानों तक सीमित रह गई, तो समाज का विश्वास खो देगी।

आज आवश्यकता तेज़ पत्रकारिता की नहीं, बल्कि जिम्मेदार पत्रकारिता की है ऐसी पत्रकारिता जो समाज को तोड़े नहीं, जोड़े; भ्रम नहीं, स्पष्टता दे और केवल प्रतिक्रिया नहीं, दिशा प्रदान करे।

एमडीएसयू में प्रवेश वृद्धि के लिए विशेष अभियान शुरू

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने शिक्षकों को दी अहम जिम्मेदारी

शिक्षा की गुणवत्ता, नवाचार और जवाबदेही पर आधारित विकास योजना पर जोर

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में अतिथि शिक्षकों की एक अहम बैठक कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में आयोजित हुई। बैठक में कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अतिथि शिक्षक शामिल हुए। इस बैठक का मुख्य फोकस विश्वविद्यालय में घटते प्रवेश को बढ़ाने, पढ़ाई के स्तर को बेहतर बनाने और संस्थान के समग्र विकास को गति देने पर रहा। अपने संबोधन में कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने कहा कि अतिथि शिक्षक विश्वविद्यालय की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में अतिथि शिक्षक विभिन्न विभागों में कार्य कर रहे थे और उनसे अपेक्षा की गई कि वे केवल पढ़ाने तक सीमित न रहकर अन्य जिम्मेदारियों में भी सक्रिय भूमिका निभाएं।

कुलगुरु ने शिक्षकों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे नए विद्यार्थियों को जोड़ने के लिए व्यक्तिगत प्रयास करें। प्रत्येक शिक्षक को कुछ नए विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाने का लक्ष्य दिया गया, वहीं विभागों को भी न्यूनतम संख्या सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। आवश्यकता पड़ने पर सीटों में बढ़ोतरी के लिए भी लचीलापन रखने की बात कही गई।

प्रवेश बढ़ाने के लिए सुझाव दिए गए कि शिक्षक विद्यार्थियों और अभिभावकों से सीधे संपर्क करें, विश्वविद्यालय की सुविधाओं और अवसरों की जानकारी दें तथा डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर संस्थान की गतिविधियों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं। परिसर की सुविधाएं, छात्रावास, खेलकूद, छात्रवृत्तियां और “लर्न, अर्न एंड परफॉर्म” जैसी योजनाओं को प्रमुखता से प्रस्तुत करने पर जोर दिया गया।

शिक्षण के स्तर को लेकर कुलगुरु ने स्पष्ट किया कि केवल सैद्धांतिक पढ़ाई पर्याप्त नहीं रही, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान और कौशल आधारित प्रशिक्षण देना जरूरी हो गया है। उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को पढ़ाई के साथ जोड़ने तथा विभिन्न विभागों में प्रायोगिक गतिविधियों को बढ़ाने के निर्देश दिए।

बैठक में यह भी तय हुआ कि विभाग नियमित रूप से सेमिनार और शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करेंगे, ताकि विद्यार्थियों को विशेषज्ञों से सीखने का अवसर मिल सके। साथ ही प्लेसमेंट गतिविधियों को मजबूत करने और पूर्व विद्यार्थियों से संपर्क बढ़ाने के लिए एलुमनी नेटवर्क को सक्रिय करने पर भी जोर दिया गया।

प्रशासनिक सुधारों के तहत परीक्षा परिणाम समय पर जारी करने, प्रवेश प्रक्रिया को व्यवस्थित रखने तथा अतिथि शिक्षकों से जुड़े भुगतान संबंधी मुद्दों को सुलझाने के निर्देश दिए गए। विभागाध्यक्षों को आवश्यक शैक्षणिक आंकड़े शीघ्र उपलब्ध कराने के लिए कहा गया।

अंत में कुलगुरु ने शिक्षकों से संस्थान के साथ जुड़ाव की भावना रखने का आग्रह किया और कहा कि वे विश्वविद्यालय के विकास में सहभागी के रूप में कार्य करें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की संख्या चाहे कम हो, लेकिन शिक्षण कार्य पूरी निष्ठा से किया जाना चाहिए।

कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने बैठक के निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि किसी भी विभाग की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह विद्यार्थियों को कितना आकर्षित कर पाता है। उन्होंने सभी शिक्षकों से अपील की कि वे लिए गए निर्णयों को व्यवहार में लाएं और विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने में योगदान दें।

पत्रकार तटस्थ नहीं, निष्पक्ष बनें... पत्रकारिता में संवेदना और साहस दोनों जरूरी

नारद जयंती पर पत्रकारिता की चुनौतियों और बदलती भूमिका पर हुई विचार गोष्ठी

अजमेर। सूचना क्रांति और डिजिटल दौर में पत्रकारिता जहां समाज की सबसे प्रभावशाली शक्ति बनकर उभरी है, वहीं उसके सामने विश्वसनीयता, संवेदनशीलता और वैचारिक चुनौतियां भी तेजी से बढ़ रही हैं। नारद जयंती के अवसर पर महर्षि नारद जयंती समारोह समिति अजयमेरु की ओर से आयोजित विचार गोष्ठी में कुछ ऐसे ही मुद्दों पर गंभीर मंथन हुआ। “वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता जगत की चुनौतियां एवं उनका निवारण” विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में वक्ताओं ने पत्रकारिता की बदलती दिशा, सामाजिक दायित्व और भारतीय दृष्टि पर अपने विचार रखे।

गोष्ठी में प्रज्ञा प्रवाह राजस्थान के सह संयोजक डॉ. सत्यनारायण कुमावत ने कहा कि भारतीय संस्कृति में देवर्षि नारद को संवाद और संचार का प्रथम सूत्रधार माना जाता है, लेकिन आधुनिक माध्यमों में उनकी छवि को केवल एक विदूषक के रूप में प्रस्तुत किया गया, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि नारदजी अपनी संवाद शैली में निष्पक्ष, स्पष्ट और निर्भीकथे तथा आज के पत्रकारों को उनके गुणों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को तटस्थ रहने की बजाय निष्पक्ष होना चाहिए, क्योंकि तटस्थता कई बार सत्य से दूरी बना देती है, जबकि निष्पक्षता समाज और राष्ट्रहित के पक्ष में खड़े होने की प्रेरणा देती है। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान समय में पत्रकारिता, समाज और राष्ट्र को पश्चिमी संस्कृति एवं विचारधारा से कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे दौर में पत्रकारों को निर्भीकता के साथ निष्पक्ष पत्रकारिता करनी चाहिए। डॉ. कुमावत ने नारदजी के 84 भक्ति सूत्रों को पत्रकारिता की “भगवद्गीता” बताते हुए कहा कि मीडिया केवल समाचारों का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा और मार्गदर्शन देने वाली शक्ति है। पत्रकारिता का उद्देश्य समाज को जागरूक करना और सकारात्मक सोच विकसित करना होना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और समाज को समृद्ध एवं जागरूक बनाने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि हम सभी किसी न किसी रूप में मीडिया से जुड़े हैं—कभी पाठक, कभी श्रोता, तो कभी दर्शक और उपभोक्ता के रूप में। उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में मीडिया और समाज के बीच दूरी बढ़ती दिखाई दे रही है। विदेशों में मीडिया द्वारा सत्य को सामने लाना अपना अधिकार और कर्तव्य माना जाता है, लेकिन भारतीय पत्रकारिता केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रही, बल्कि समाज को सही दिशा देने की परंपरा भी उसकी पहचान रही है। प्रो. अग्रवाल ने कहा कि वर्तमान पत्रकारिता में संवेदना का अभाव देखने को मिलता है। समाज के प्रति पीड़ा और सरोकार होना पत्रकारिता की आत्मा है। यदि पत्रकारिता में संवेदना, विवेक और जिम्मेदारी का समावेश हो, तभी वह समाज के लिए सार्थक साबित हो सकती है।कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष सुनील दत्त जैन एवं मंत्री कंवल प्रकाश किशनानी ने अतिथियों का स्वागत किया। अंत में भूपेंद्र उबाना ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में पत्रकारों, शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

एमडीएसयू में बदलाव की नई आहट

अब डाटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी और एआई कोर्स से जुड़ेगा युवाओं का भविष्य

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अब पारंपरिक शिक्षा के साथ आधुनिक तकनीकी शिक्षा की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने विद्यार्थियों को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप तैयार करने के लिए डाटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे अत्याधुनिक पाठ्यक्रम शुरू करने की तैयारी तेज कर दी है। गुरुवार को बृहस्पति भवन स्थित अशोक कक्ष में आयोजित समीक्षा बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों, अधिष्ठाताओं, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। बैठक का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, प्रशासनिक और छात्रहित से जुड़ी व्यवस्थाओं को अधिक प्रभावी और आधुनिक बनाना रहा। बैठक में कुलगुरु ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि शिक्षा व्यवस्था में समयबद्धता और गुणवत्ता दोनों आवश्यक हैं। उन्होंने सभी विभागों को 30 जून तक पाठ्यक्रम पूर्ण करने के निर्देश दिए, वहीं परीक्षा शाखा को 31 जुलाई तक हर हाल में परीक्षा परिणाम घोषित करने को कहा। उन्होंने यह भी साफ किया कि प्रवेश प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही या देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। विश्वविद्यालय अब केवल डिग्री देने तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि विद्यार्थियों को रोजगार और तकनीकी कौशल से भी जोड़ने की दिशा में काम कर रहा है।

इसी सोच के तहत एमएससी डाटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी और एआई आधारित स्किल कोर्स शुरू करने की प्रक्रिया तेज की जा रही है। माना जा रहा है कि ये पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को आईटी और डिजिटल सेक्टर में नए अवसर प्रदान करेंगे। शोध कार्यों को भी आधुनिक तकनीक से जोड़ने की पहल की गई है। विश्वविद्यालय में जल्द ही आरएफआईडी आधारित सिस्टम स्थापित किया जाएगा, जिससे शोध गतिविधियां अधिक व्यवस्थित और पारदर्शी बन सकेंगी।

इसके अलावा अंग्रेजी एवं संस्कृत विषयों में नए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू करने की तैयारी भी बैठक में प्रमुख चर्चा का विषय रही। छात्रावास व्यवस्थाओं को लेकर भी प्रशासन ने जिम्मेदारियां तय कीं। गार्गी एवं अपाला छात्रावास का संचालन प्रो. ऋतु माथुर के नेतृत्व में किया जाएगा, जबकि डॉ. रोहिणी अग्रवाल सहयोगी की भूमिका निभाएंगी। नचिकेता छात्रावास की जिम्मेदारी डॉ. आशीष पारीक को सौंपी गई है तथा प्रो. अरविंद पारीक को मुख्य वार्डन नियुक्त किया गया है।

बैठक में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से जुड़े अनेक वरिष्ठ शिक्षाविद्, अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे। इनमें प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. सुभाष चंद्र, प्रो. आशीष भटनागर, प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. मोनिका भटनागर, प्रो. अरविंद पारीक, डॉ. आशीष पारीक, डॉ. दीपिका उपाध्याय, डॉ. अश्विनी तिवारी, कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील कुमार टेलर, विनोद कुमार जैन, सूरजमल राव, तपेश्वर कुमार, इति श्री, डॉ. लारा शर्मा, डॉ. असीम जयंती देवी, एच. एस. जाखड़, विन्सेंट फिलिप्स, वैभव खन्ना, डॉ. विवेक पारीक, डॉ. कल्पना सोनी, डॉ. रोहिणी अग्रवाल, राजेंद्र तिवारी, सीताराम जोशी तथा मुख्य सुरक्षा अधिकारी धन्नालाल सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। बैठक में विश्वविद्यालय को स्वच्छ, डिजिटल और विद्यार्थियों के लिए अधिक सुविधाजनक बनाने पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

एमडीएसयू में 'एंडेमिक बर्ड डे' का आयोजन

पक्षी संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर जोर

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग में 'एंडेमिक बर्ड डे' के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभाग के ईको क्लब के तत्वावधान में हुए इस आयोजन में विलुप्त होती पक्षी प्रजातियों के संरक्षण, उनके प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा तथा पर्यावरणीय बदलावों के प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने कहा कि जैव विविधता की रक्षा आज की प्रमुख आवश्यकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय चेतना विकसित करना भी उनकी जिम्मेदारी है।

प्रो. प्रवीण माथुर ने अपने संबोधन में पक्षियों की प्रजातीय विविधता और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्थानिक पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए इनके संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं।

कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। उर्वशी शर्मा और तनमय पवार ने पक्षियों के प्राकृतिक आवास, संरक्षण की चुनौतियों और जनभागीदारी की आवश्यकता पर प्रस्तुति दी। विद्यार्थियों ने शोध एवं वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर पक्षी संरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को साझा किया।

आयोजन में पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने पर विशेष बल दिया गया। कार्यक्रम ने विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करने के साथ-साथ वैज्ञानिक सोच और जागरूकता को भी बढ़ावा दिया।

जब गुरुदेव टैगोर ने शिक्षा को दी खुली उड़ान

प्रकृति, कला और स्वतंत्र सोच से गढ़ा नई पीढ़ी का भविष्य

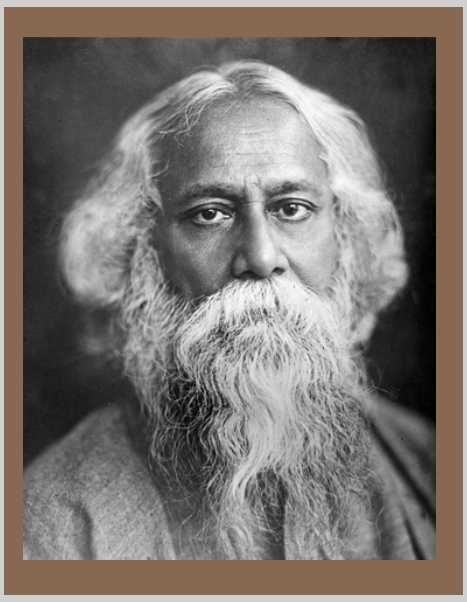

भारतीय शिक्षा और साहित्य के इतिहास में रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम केवल एक महान कवि के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे दूरदर्शी शिक्षाविद के रूप में दर्ज है जिन्होंने शिक्षा को जीवन से जोड़ने का कार्य किया। उस दौर में, जब शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकों और रटने तक सीमित माना जाता था, तब गुरुदेव टैगोर ने बच्चों को खुली हवा, प्रकृति, संगीत, कला और स्वतंत्र विचारों के बीच सीखने की नई दिशा दी। उनके शिक्षा दर्शन ने भारतीय समाज को यह समझाया कि सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य के भीतर संवेदनशीलता, रचनात्मकता और मानवता का विकास करे। रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता में हुआ था। बचपन से ही वे साहित्य, संगीत और कला के प्रति गहरी रुचि रखते थे। आगे चलकर उन्होंने अपनी लेखनी सेभारतीय साहित्य को वैश्विक मंच पर स्थापित किया। उनकी प्रसिद्ध कृति गीतांजलि के लिए वर्ष 1913 में उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। वे नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय बने थे। गुरुदेव टैगोर ने शिक्षा को केवल किताबों तक सीमित नहीं माना, बल्कि उसे जीवन, प्रकृति और रचनात्मकता से जोड़ने का प्रयास किया।

उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास होना चाहिए। इसी सोच के साथ उन्होंने वर्ष 1901 में शांतिनिकेतन में एक विद्यालय की स्थापना की, जो आगे चलकर विश्व भारती विश्वविद्यालय बना। यहाँ विद्यार्थियों को खुले वातावरण और प्रकृति के बीच शिक्षा दी जाती थी ताकि उनका मानसिक और रचनात्मक विकास स्वाभाविक रूप से हो सके। टैगोर ने पारंपरिक “रटकर पढ़ाई” की पद्धति का विरोध किया। वे समझ, तर्क और अनुभव आधारित शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि बच्चों को केवल जानकारी देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनमें स्वतंत्र सोच और प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित करना अधिक आवश्यक है।

उन्होंने विद्यार्थियों को जिज्ञासु और आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया। शिक्षा में कला और संस्कृति के महत्व को समझते हुए गुरुदेव ने संगीत, नृत्य, चित्रकला और साहित्य को पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। उनका विश्वास था कि कला बच्चों के भीतर संवेदनशीलता, रचनात्मकता और आत्मविश्वास विकसित करती है।

“रवीन्द्र संगीत” के माध्यम से उन्होंने भारतीय संगीत और सांस्कृतिक चेतना को नई पहचान दी। टैगोर की शिक्षा व्यवस्था केवल भारत तक सीमित नहीं थी। वे शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखते थे। विश्व भारती विश्वविद्यालय में उन्होंने विभिन्न देशों के विद्यार्थियों और शिक्षकों को आमंत्रित कर “विश्व बंधुत्व” और सांस्कृतिक समरसता की भावना को मजबूत किया। उनका मानना था कि शिक्षा लोगों को जोड़ने और मानवता को मजबूत करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने बच्चों के लिए आनंदमय और बाल-केंद्रित शिक्षा पर विशेष बल दिया। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा बच्चों पर बोझ नहीं बननी चाहिए, बल्कि उसे खोज, अनुभव और आनंदका माध्यम बनना चाहिए। इसलिए उन्होंने विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता और रचनात्मकता को शिक्षा का केंद्र बनाया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी गुरुदेव टैगोर ने अपने विचारों और लेखनी से देशवासियों को जागरूक किया। जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में उन्होंने अंग्रेज सरकार द्वारा दी गई “नाइटहुड” की उपाधि लौटा दी थी। यह उनके राष्ट्रप्रेम और आत्मसम्मान का प्रतीक माना जाता है। आज के दौर में, जब शिक्षा केवल अंकों और प्रतिस्पर्धा तक सीमित होती जा रही है, तब गुरुदेव टैगोर के विचारयुवाओं के लिए नई प्रेरणा बनकर सामने आते हैं।

आज की पीढ़ी को उनसे यह सीखना चाहिए कि शिक्षा का असली उद्देश्य केवल सफल करियर बनाना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, रचनात्मक और जिम्मेदार इंसान बनना है। टैगोर ने सिखाया कि जीवन में ज्ञान के साथ-साथ मानवता, नैतिकता, कला, प्रकृति प्रेम और स्वतंत्र चिंतन भी उतना ही आवश्यक है। डिजिटल और तेज़ रफ्तार जीवनशैली के इस दौर में युवाओं को गुरुदेव से यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि वे अपनी संस्कृति, साहित्य और मानवीय मूल्यों से जुड़े रहें। उनकी सोच यह संदेश देती है कि सच्ची प्रगति वही है जिसमें विज्ञान के साथ संवेदनाएं, आधुनिकता के साथ संस्कार और सफलता के साथ समाज के प्रति जिम्मेदारी भी शामिल हो। यही कारण है कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर आज भी केवल एक साहित्यकार नहीं, बल्कि नई पीढ़ी के मार्गदर्शक और भारतीय शिक्षा दर्शन के अमर प्रतीक माने जाते हैं।

एआई : शिक्षा का भविष्य या रचनात्मकता का अंत?

आज के दौर में मनुष्य तेजी से तकनीक पर निर्भर होता जा रहा है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण बन चुकी है। विशेष रूप से युवा वर्ग पढ़ाई, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट और परीक्षा के समय रिवीजन जैसी लगभग हर शैक्षणिक गतिविधि के लिए एआई का सहारा लेने लगा है। इसका प्रभाव उनकी सोचने-समझने की क्षमता, रचनात्मकता और नई चीजें सीखने की इच्छा पर साफ दिखाई देने लगा है।

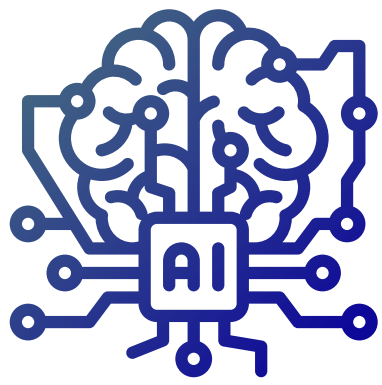

आज के विद्यार्थी स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में स्वयं मेहनत करने की बजाय एआई के माध्यम से तुरंत उत्तर प्राप्त करना अधिक आसान समझते हैं। किसी भी विषय की जानकारी के लिए वे सीधे एआई पर निर्भर हो जाते हैं, जिससे उनकी स्वयं खोजने, समझने और विश्लेषण करने की आदत धीरे-धीरे कम होती जा रही है। इसका परिणाम यह है कि युवाओं की रचनात्मक सोच और नए विचार विकसित करने की क्षमता प्रभावित हो रही है। एआई ने जीवन को सरल और तेज़ जरूर बनाया है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग ने युवाओं को कहीं न कहीं आलसी भी बना दिया है। यदि इसका संतुलित और सीमित उपयोग नहीं किया गया, तो भविष्य में विद्यार्थियों की वास्तविक कौशल क्षमता और करियर पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

यदि एआई पर निर्भरता इसी तरह बढ़ती रही, तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव बुद्धिमत्ता पर हावी होती दिखाई दे। आज एआई कई कार्य इंसानों से अधिक तेज़ और सटीक तरीके से कर सकता है, लेकिन मानवीय तरीके से कर सकता है, लेकिन मानवीय भावनाएँ, रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति और सोचने-समझने की क्षमता आज भी सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। मनुष्य को AI का उपयोग करना चाहिए, लेकिन एक सीमा में रहकर। केवल आवश्यकता पड़ने पर ही इसका अधिक उपयोग उचित है। खासकर युवाओं को चाहिए कि वे AI पर अपनी निर्भरता कम करें और शिक्षा से जुड़े मामलों में अपने शिक्षकों से सलाह लें तथा स्वयं अपने शिक्षकों से सलाह लें तथा स्वयं सोचने-समझने की आदत विकसित करें। विद्यार्थियों को अपने रिवीजन नोट्स स्वयं तैयार करने चाहिए, ताकि उनकी सीखने और समझने की क्षमता मजबूत हो सके।

यदि आज का युवा शुरुआत से ही AI पर अत्यधिक निर्भर हो जाएगा, तो भविष्य में उसे कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

माननीय कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल जी के मार्गदर्शन में, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थी – लोकेश कश्यप, नेहा शर्मा और मानसी माहेश्वरी के संयुक्त प्रयास से टैबलॉयड पेपर का प्रकाशन।